डॉ. मीरा कुमारी
संस्कृत विभाग, सी. एम. जे. कॉलेज, खुटौना
ललित नारायण मिथिला विश्विद्यालय, दरभंगा, बिहार
ईमेल आइडी - kmeera573@gmail.com
Mobile number- 6287538352

वर्ग- बीए पार्ट 1 (H) दिनांक - 17-08-2020

विषय- वैदिक साहित्य

यजुर्वेद संहिता

"गद्यात्मको यजु:" अर्थात् गद्य में रचे गए मंत्रों को यजूष् कहते हैं। यजुषों का वेद होने के कारण ही यह यजुर्वेद कहलाता है । इसमें मुख्य रूप से वैदिक कर्मकांड का प्रतिपादन है।

यजुर्वेद को 'अध्वर्युवेद 'भी कहा जाता है । इसका कारण यह है कि यह वेद 'अध्वर्यु' नामक 'होता' के मंत्र पाठ के लिए होता है। इस वेद का पाठ अध्वर्यु नामक होता करते हैं ।

वैयाकरण पतंजलि ने अपने महाभाष्य में यजुर्वेद की 101 शाखाएं होने का उल्लेख किया है, किंतु आजकल इस वेद की केवल छह शाखाएं ही उपलब्ध होती है । वे शाखाएं इस प्रकार है-

शुक्ल यजुर्वेद की-

१. वाजसनेयी संहिता (माध्यन्दिन)
२. काण्व संहिता ,

कृष्ण यजुर्वेद की -

१. कठ संहिता
२. कपिष्ठल संहिता
३. मैत्रायणी संहिता
४. तैत्तिरीय संहिता

यजुर्वेद के दो भाग हैं- 1. शुक्ल यजुर्वेद 2. कृष्ण यजुर्वेद

शुक्ल यजुर्वेद और कृष्ण यजुर्वेद में अंतर-

१. शुक्ल यजुर्वेद आदित्य संप्रदाय का प्रतिनिधि है
२. शुक्ल यजुर्वेद में केवल यज्ञ में प्रयोग किए जाने वाले मंत्रों का ही संकलन है
३. इसमें मंत्र और ब्राह्मण का मिश्रण नहीं है । विशुद्धता की दृष्टि से इसे शुक्ल कहा गया है

४. इसके मंत्रों की प्राप्ति सूर्य से हुई है। सूर्य का प्रकाश शुक्ल होता है। अतः इसे शुक्ल यजुर्वेद कहा गया है।
५. वान्त न होने से शुक्ल (शुद्ध) है। साफ है।
६. कृष्ण यजुर्वेद से मंत्र लेकर बाद में संकलित हुआ है। अतः यह बाद का है।
७. स्पष्ट और व्यवस्थित है।

कृष्ण यजुर्वेद

१. यह ब्रह्म संप्रदाय का प्रतिनिधि है
२. कृष्ण यजुर्वेद में यज्ञ के मंत्रों के साथ ही साथ, यज्ञ के विधि- विधान की व्याख्या करने वाले ब्राह्मण-भाग का भी संकलन है।
३. इसमें मंत्र और ब्राह्मण भाग का मिश्रण है। मिश्रण के कारण इसे कृष्ण कहा गया है।
४. सूर्य के प्रकाश से मंत्रों की प्राप्ति न होने के कारण ही शुक्ल से विपरीत इसे कृष्ण यजुर्वेद कहा जाता है ।
५. वान्त होने से कृष्ण है।
६. यह प्राचीन है ।
७. यह स्पष्ट और अव्यवस्थित है।